SA – I (2016-17)
Subject :- Hindi
Class – VII

पाठ - 8

क्या निराश हुआ जाए ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न – 1. वर्तमान स्थिति में चिंता का प्रमुख कारण क्या है ?
उत्तर – लोगों की जीवन मूल्यों के प्रति डगमगाती आस्था चिंता का प्रमुख कारण है।

प्रश्न - 2. महान मनीषियों के सपनों का भारत कैसा है ?
उत्तर – महान मनीषियों के सपनों का भारत सभी धर्मों के आदर्शों की मिलन भूमि है।

प्रश्न - 3. भारतवर्ष में कानून को किस रूप में देखा जाता है ?
उत्तर — भारतवर्ष में कानून को धर्म के रूप में देखा जाता है।

प्रश्न - 4. बस खराब हो जाने पर कंडक्टर साइकिल लेकर क्यों चलता बना ?
उत्तर - वह दूसरी बस लाने के लिए बस अड्डे गया था।

प्रश्न - 5. कुछ यात्री बस ड्राइवर को मारने के लिए क्यों उतारू थे ?
उत्तर - बस यात्रियों को लगा कि ड्राइवर और कंडक्टर उन्हें धोखा दे रहे हैं, इसलिए कुछ यात्री ड्राइवर को मारने के लिए उतारू थे।

प्रश्न - 6. 'क्या निराश हुआ जाए' पाठ पढ़ने के बाद आप अपने में क्या परिवर्तन लाना चाहेंगे ?
उत्तर - हम जीवन मूल्यों के प्रति अपनी आस्था दृढ़ करने का प्रयत्न करेंगे।

अथवा

स्व विवेकानुसार लिखें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. जीवन के महान मूल्यों के बारे में आज हमारी आस्था क्यों हिलने लगी है?

उत्तर - आजकल समाज में बेइमानी और भ्रष्टाचार का बोलबाला है। ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है। सच्चाई को डर की निशानी माना जा रहा है। कोई भी आदमी ईमानदार नहीं रह गया है, इसलिए आज जीवन के महान मूल्यों के प्रति हमारी आस्था हिलने लगी है।

प्रश्न 2. 'वर्तमान परिस्थिति यों में हताश हो जाना ठीक नहीं है।' उदाहरणों से इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर - लेखक वर्तमान परिस्थितियों में भी हताश हो जाने की उचित नहीं मानता। उसने ईमानदारी और सच्चाई के कुछ उदाहरण देकर अपने मत की पुष्टि की है। लेखक ने टिकट बाबू और बस कंडक्टर के उदाहरण दिए हैं।

प्रश्न 3. किस प्रकार के आचरण को निकृष्ट कहा गया है?

उत्तर - लोभ - मोह, काम - क्रोध आदि विकारों को प्रधान मान लेना और उन्हें मन तथा बुद्धि के इशारे छोड़ देने को निकृष्ट आचरण कहा गया है।

प्रश्न 4. इस पाठ का शीर्षक 'क्या निराश हुआ जाए' क्यों रखा गया है?

उत्तर - लेखक 'क्या निराश हुआ जाए' शीर्षक के माध्यम से हमें प्रेरणा दे रहा है कि हमें मन में निराशा का भाव नहीं लाना चाहिए। वर्तमान परिस्थितियों में भी जीवन - मूल्यों के प्रति हमारी आस्था नहीं डगमगानी चाहिए। इसलिए लेखक ने पाठ का शीर्षक 'क्या निराश हुआ जाए' रखा है।

प्रश्न. 5. लेखक ने आज देश में व्याप्त निराशा का क्या कारण बताया है?

उत्तर - आज देश में बेईमानी और भ्रष्टाचार का साम्राज्य फैला हुआ है। लोगों की जीवन मूल्यों में कोई आस्था नहीं रह गई है। ईमानदार व्यक्ति को मूर्ख समझा जाने लगा है। झूठ और बेइमानी का रोज़गार करने वाले फल-फूल रहे हैं। इसी कारण आज देश में निराशा का माहौल पैदा हो गया है।

प्रश्न 6. आज हमारी मनोवृत्तियों में निराशा क्यों आती जा रही है?

उत्तर - आजकल समाज में सच्चाई, ईमानदारी, प्रेमभाव तथा सेवा भावना आदि जीवन मूल्य गायब हो रहे हैं। ठगी, धोखाधड़ी और विश्वासघात जैसी बुराइयाँ पनप रही हैं। ईमानदारी को तो मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है। इसलिए मनुष्य में निराशा के भाव आने लगते हैं।

प्रश्न 7. नीचे लिखी पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए :

(क) इस समय सुखी वही है, जो कुछ नहीं करता। जो कुछ भी करेगा, उसमें लोग दोष खोजने लगेंगे।

भावार्थ - आजकल जो व्यक्ति निकम्मा है अर्थात् कुछ नहीं करता, वही सुखी है। जब कोई व्यक्ति कुछ काम करेगा तो समाज उसमें गलतियाँ ही निकालेगा। इससे तो अच्छा है कुछ न करो।

(ख) झूठ तथा फरेब का रोज़गार करने वाले ~~फूल~~ फल-फूल रहे हैं।

भावार्थ - झूठ और धोखाधड़ी करने वालों के काम-धंधे अधिक बढ़िया कर रहे हैं। बेईमानी करने वाले ही आजकल अमीर बन रहे हैं।

(ग) सामाजिक क़ायदे-कानून कभी युग-युग से परीक्षित आदर्शों

से टकराते हैं।

भावार्थ - लंबे समय से चले आ रहे सामाजिक नियम कभी-कभी हमारे युगों-युगों के परीक्षित आदर्शों से टकराने लगते हैं। इसलिए ऐसे कानूनों में बदलाव जरूरी है।

(घ) बुराई में रस लेना बुरी बात है, अच्छाई को उतना ही रस लेकर उजागर न करना और भी बुरी बात है।

भावार्थ - किसी की बुराई को बताते समय उसमें रस नहीं लेना चाहिए। उसकी अच्छी आदत को भी प्रकट करना चाहिए। यदि आप ऐसा नहीं करते तो आप उस व्यक्ति के साथ बुरा कर रहे हो।

पाठ - 3

प्रेमचंद का बचपन

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. नवाब (प्रेमचंद) ने रामू को का कान क्यों काटा?
उत्तर - नवाब (प्रेमचंद) बहुत शरारती था। उसने बाँस की कमानी से हजामत बनाते समय रामू का कान काट दिया।

प्रश्न 2. नवाब का निशाना कैसा था?
उत्तर - नवाब का निशाना अचूक था। निशानेबाजी में वह अपनी टोली के लड़कों का सरताज था।

प्रश्न 3. बचपन में नवाब को ~~गुल्ली-डंडे~~ किस खेल में महारथ हासिल थी?
उत्तर - बचपन में नवाब को गुल्ली-डंडे के खेल में महारथ हासिल थी।

प्रश्न 4. अपनी किस कहानी में प्रेमचंद ने अपने बचपन का उल्लेख किया है?
उत्तर - 'चोरी' कहानी में।

प्रश्न 5. प्रेमचंद के चचेरे भाई का नाम क्या था?
उत्तर - बलभद्र (हलधर)।

प्रश्न 6. क्या देकर प्रेमचंद मौलवी साहब के रौद्र रूप को शांत कर दिया करते थे?
उत्तर - प्रेमचंद सेर-आधा सेर कलियाँ, दस-पाँच ऊख तथा जौ या गेहूँ की हरी बालियाँ देकर मौलवी साहब का रौद्र रूप शांत कर दिया करते थे।

प्रश्न 7. प्रेमचंद और हलधर ने चार से कितने रुपये चुराए थे?
उत्तर - एक रुपया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. प्रेमचंद बचपन में नटखट थे, यह कैसे पता चलता है?

उत्तर प्रेमचंद बचपन में बहुत नटखट थे। एक बार उन्होंने बाँस की कमानी से रामू का कान काट दिया था। किसी के खेत में घुसकर ऊख तोड़ लाना, मटर उखाड़ लाना आदि उनकी शरारतों में शामिल था।

प्रश्न 2. पाठ के आधार पर प्रेमचंद की पढ़ाई के विषय में अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर - प्रेमचंद ने आठ आठ वर्ष की आयु में पढ़ाना शुरु किया। वे अपने चचेरे भाई हलधर के साथ दूसरे गाँव (लालपुर) मौलवी साहब से पढ़ने जाते थे। वे मौलवी साहब से उर्दू - फ़ारसी पढ़ते थे।

प्रश्न 3. प्रेमचंद ने बूढ़े ~~माली~~ माली को बाल - प्रकृति का पंडित क्यों कहा है?

उत्तर - प्रेमचंद ने बूढ़े माली को बाल - प्रकृति का पंडित कहा है क्योंकि वह प्रेमचंद और उसके चचेरे भाई हलधर से इस प्रकार खेत में काम लेता था जैसे उनपर एहसान कर ~~क~~ रहा है। जो काम वह पूरे दिन में करता था वही काम प्रेमचंद और उसका भाई एक घंटे में कर देते थे।

~~प्रश्न 4.~~

प्रश्न 4. सफ़री एजेंट किसे कहते हैं? प्रेमचंद ने अपने को मौलवी साहब का सफ़री एजेंट क्यों कहा है?

उत्तर - जो किसी की तारीफ बहुत बढ़ा - चढ़ा कर करे, उसके गुणों का बखान दुनिया के सामने करे, उसे सफरी एजेंट कहते हैं। प्रेमचंद मौलवी साहब के गुस्से से बचने के लिए कभी झूठा बहाना बनाते, कभी उनके लिए कोई सौगात ले जाते। इसी कारण प्रेमचंद ने स्वयं को सफरी एजेंट कहा है।

प्रश्न 5. पढ़ाई से बचने के लिए प्रेमचंद क्या-क्या तरकीबें करते थे ?

उत्तर – पढ़ाई से बचने के लिए प्रेमचंद मौलवी साहब की खूब खिदमत करते थे। बकरी के लिए हरी-हरी पत्तियाँ तोड़ लाना, बाजार से सामान लाना तथा हुक्का तर करना आदि कार्य प्रेमचंद मौलवी साहब को खुश करने के लिए करते थे।

प्रश्न 6. पकड़े जाने पर प्रेमचंद ने झूठ क्यों बोला ? झूठ बोलने के पीछे उन्होंने क्या कारण बताए ?

उत्तर – प्रेमचंद और उनके चचेरे भाई हलधर ने घर से एक रूपया चुराया था। पकड़े जाने पर मार-पीट के डर से प्रेमचंद ने झूठ बोल दिया कि रूपया हलधर ने चुराया है। उन्होंने झूठ बोलने के पीछे कई कारण बताए जैसे – अगर आदमी की जान खतरे में हो तो झूठ बोलना क्षम्य है, हलधर मार खाने के आदी हैं अगर उन्हें दो-चार घूँसे और पड़े तो उनका कुछ नहीं बिगड़ेगा, हलधर ने भी उसे फँसाने के लिए झूठ बोला होगा।

प्रश्न 7. प्रेमचंद के मदरसे एवं उसके मौलवी का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर – मौलवी साहब के मदरसे में फ़ारसी और उर्दू पढ़ाई जाती थी। वहाँ हाजिरी का कोई रजिस्टर ही नहीं था। गैर हाजिरी पर कोई जुर्माना नहीं देना पड़ता था। मदरसे में पढ़ाई का तरीका पुराना था। वहाँ रटंत पर जोर था। गणित के पहाड़े रटाए जाते थे। मौलवी साहब आमदनामा पक्का करवाते थे। इसी तरह संस्कृत के श्लोक भी रटाए जाते थे।

प्रश्न 8. अर्थ स्पष्ट कीजिए :

(क) कभी-कभी हमारी बला फतिंगों ही के सिर चली जाती थी। उनका बलिदान कर हम मौलवी साहब के रौद्र रूप को प्रसन्न कर लिया करते थे।

अर्थ - कभी - कभी प्रेमचंद और हलधर की मुसीबतें फतिंगों को झेलनी पड़ती थी। अर्थात प्रेमचंद और हलधर मौलवी साहब को खुश करने के लिए उनकी चिड़ियों के लिए फतिंगें पकड़ कर लाते थे। अब उनका त्याग कर प्रेमचंद और हलधर मौलवी साहब के गुस्से को शांत कर देते थे।

(ख) उर्दू के बारे में कहा जाता है कि उर्दू पढ़ाई नहीं जाती है, घलुए में आती है, पढ़ाई तो फ़ारसी जाती है।

अर्थ - यहाँ ऐसा कहा जाता है कि उर्दू को पढ़ाया नहीं जाता बल्कि रटाया जाता है। फ़ारसी को पढ़ाया जाता है।

(ग) गाँव के पास पहुँचा तो गाँव के डीह का सुमिरन किया; क्योंकि अपने हलके में डीह की ही इच्छा प्रधान होती है।

अर्थ - प्रेमचंद ने मार के डर से गाँव के पास पहुँचकर गाँव के देवी - देवताओं को याद किया। क्योंकि अपने इलाके में अपने स्थानीय देवी - देवताओं की इच्छा ही मुख्य होती है।

प्रश्न 3. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरो :

उत्तर = (क) घुट्टी (ख) चाँदमारी (ग) बड़े (घ) चिड़िया
(ङ) घलुए (च) डीह

पाठ - स्वतन्त्रता का दीपक

लघु उत्तरीय प्रश्न -

प्र० 1. 'स्वतन्त्रता का दीपक' कविता कब लिखी गई होगी ?
उ० 1. (ख) स्वतन्त्रता - प्राप्ति के पश्चात्

प्र० 2. कवि ने स्वतन्त्रता के दीपक को क्या - क्या उपमाएँ दी हैं ?
उ० 2. कवि ने स्वतंत्रता के दीपक को रात्री, शक्ति, स्वतंत्रता, स्वदेश, शहीद का, पुण्य प्राण - दान आदि की उपमाएँ दी हैं।

प्रश्न 3. 'स्वतंत्रता का दीपक' कविता में कवि अपने देशवासियों से क्या आह्वान करता है ?
उ० 3. 'स्वतंत्रता का दीपक' कविता में कवि अपने देशवासियों से कहता है कि मेरे देशवासियों यह स्वतंत्रता रूपी दीपक सदैव जलाए रखना इसे कभी बुझने मत देना।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

प्र० 1. स्वतंत्रता को कवि ने दीपक की संज्ञा क्यों दी है ?
उ० 1. स्वतन्त्रता को कवि ने दीपक की संज्ञा इसलिए दी है क्योंकि जिसप्रकार दीपक अंधकार को दूर करके प्रकाश फैला कर उजाला कर देता है उसी प्रकार स्वतंत्रता भी परतंत्रता के अंधकार को दूर कर लोगों के जीवन में प्रकाश लाती है। उन्हें सम्मान के साथ जीना सिखाती है।

प्र० 2. कवि स्वतंत्रता के दीपक को किन - किन परिस्थितियों में जलाए रखने की प्रेरणा देता है ?
उ० 2. कवि सभी को स्वतंत्रता का दीपक विषम से विषम परिस्थितियों में भी जलाए रखने की प्रेरणा देता है उसका मानना है कि चाहे भयंकर घना अंधकार

हो या आँधी-तूफान आ रहे हों, चाहे शांति और अशांति हो, युद्ध हो या क्रांति हो, यह स्वतंत्रता का दीपक कभी भी बुझना नहीं चाहिए यह सदैव जलते रहना चाहिए। चाहे बादल गरज रहे हों या आसमान में बिजली चमक रही हो परंतु यह दीपक सदैव जलता रहना चाहिए।

प्र०3 भाव स्पष्ट कीजिए -(क) यह निशीथ का दीया ला रहा विहान है-

उ० उ- (क) तात्पर्य यह है कि अर्द्धरात्री में जलता हुआ दीपक नए सवेरे की ओर अग्रसर है अर्थात वह नयी उमंग, जोश सभी साथ लेकर आ रहा है।

भाव-

(ख) शक्ति का दिया हुआ, शक्ति को दिया हुआ।

भाव- तात्पर्य यह है कि यह स्वतंत्रता का दीपक हमें शक्ति द्वारा प्राप्त हुआ है और इसकी रक्षा भी शक्ति के द्वारा ही होगी।

(ग) यह अतीत कल्पना, यह विनीत प्रार्थना
यह पुनीत भावना, यह अनंत साधना।

भाव- स्वतंत्रता प्राप्त करने की आशा बहुत पुरानी थी इस स्वतंत्रता के साथ हमारी विनम्रता प्रार्थना, पवित्रता एवं बहुत सी तपस्याएँ जुड़ी हुई हैं।

(घ) यह किसी शहीद का पुण्य प्राण-दान है।

भाव- भाव यह है कि इस स्वतंत्रता को पाने के लिए हमारे वीर सैनिकों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया है यह न जाने किस पुण्य आत्मा के फलस्वरूप स्वतंत्रता प्राप्त हुई है।

(ङ) क्षुद्र जीत हार पर, यह दीया बुझे नहीं।

भाव- छोटी-मोटी हार-जीत से इस पर कोई फर्क नहीं पड़ना चाहिए इस दीप सदैव प्रज्ज्वलित रहना चाहिए।

****